पानी दूर हुआ या हम ?

अरुण तिवारी

नहरों, नलों और बोरवैलों के आने से जलोपयोग का हमारा अनुशासन टूटा। पीछे-पीछे फ्लश टायॅलेट आये। सीवेज मल व अन्य कचरा मिलकर नदियों तक पहुंच गया। इस तरह नल से निकला अतिरिक्त जल प्रदूषित हुआ। नहरों ने नदियों का पानी खींचकर उन्हें बेपानी बनाने का काम किया। इस कारण, खुद को साफ करने की नदियों की क्षमता घटी। परिणामस्वरूप, जलमल शोधन संयंत्र आये। शोधन के नाम पर कर्ज आया-भ्रष्टाचार आया। शुद्धता और सेहत के नाम पर बोतलबंद पानी आया। फिल्टर और आर.ओ. आये। चित्र ऐसा बदला कि पानी पुण्य कमाने की जगह, मुनाफा कमाने की वस्तु हो गया। समंदर से लेकर शेष अन्य सभी प्रकार के जल स्त्रोत प्रदूषित हुए सो अलग।

ग्लेशियर पिघले। नदियां सिकुड़ी। आब के कटोरे सूखे। भूजल स्तर तलवितल सुतल से नीचे गिरकर पाताल तक पहुंच गया। मानसून बरसेगा ही बरसेगा अब यह गारंटी भी मौसम के हाथ से निकल गई है। पहले सूखे को लेकर हायतौबा मची, अब बाढ़ की आशंका से कई इलाके परेशान हैं। नौ महीने बाद फिर सूखे को लेकर कई इलाके हैरान-परेशान होंगे। हम क्या करें? वैश्विक तापमान वृद्धि को कोसें या सोचें कि दोष हमारे स्थानीय विचार व्यवहार का भी है? दृष्टि साफ करने के लिए यह पड़ताल भी जरूरी है कि पानी हमसे दूर हुआ या फिर पानी से दूरी बनाने के हम खुद दोषी हैं।

पलटकर देखिए

भारत का दस्तावेजी इतिहास 75,000 वर्ष पुराना है। आज से 50-60 वर्ष पहले तक भारत के ज्यादातर नगरों में हैंडपम्प थे, कुएं थे, बावड़ियां, तालाब और झीलें थी, लेकिन नल नहीं थे। अमीर से अमीर घरों में भी नल की चाहत नहीं पहुंची थी। दिल्ली में तो एक पुराना लोकगीत काफी पहले से प्रचलित था। "फिरंगी नल न लगायो" स्पष्ट है कि

कुआं नहीं जाता था प्यासे के पास।
प्यासा जाता था कुएं के पास।

कालांतर में हमने इस कहावत को बेमतलब बना दिया। पानी का इंतजाम करने वालों ने पानी को पाइप में बांधकर प्यासों के पास पहुंचा दिया। बांध और नहरों के जरिये नदियों को खींचकर खेतों तक ले आने का चलन तेज हो गया। हमें लगा कि हम पानी को प्यासे के पास ले आये। वर्ष 2016 में मराठवाड़ा का परिदृश्य गवाह बना कि असल में वह भ्रम था। हमने पानी को प्यासों से दूर कर दिया। हुआ यह कि जो सामने दिखा, हमने उसे ही पानी का असल स्त्रोत मान लिया।

इस भ्रम के चलते हम असल स्त्रोत के पास जाना और उसे संजोना भूल गये। पानी कहां से आता है? पूछने पर बिटिया कहेगी कि पानी नल से आता है, क्योंकि उसने कभी देखा ही नहीं कि उसके नगर में आने वाले पानी का मूल स्त्रोत क्या है। किसान को भी बस नहर, ट्यूबवैल, समरसिबल याद रहे। नदी और धरती का पेट भरने वाली जल संरचनाओं को वे भी भूल गये।

आंख से गया, दिमाग से गया।

पहले एक अनपढ़ भी जानता था कि पानी, समंदर से उठता है। मेघ, उसे पूरी दुनिया तक ले जाते हैं। ताल तलैया, झीलें और छोटी वनस्पतियां मेघों के बरसाये पानी को पकड़कर धरती के पेट में बिठाती हैं। नदियां, उसे वापस समंदर तक ले जाती हैं। अपने मीठे पानी से समंदर के खारेपन को संतुलित बनाये रखने का दायित्व निभाती हैं। इसीलिए अनपढ़ कहे जाने वाले भारतीय समाज ने भी मेघ और समंदर को देवता माना है। नदियों से मां और पुत्र का रिश्ता बनाया। तालाब और कुआं पूजन को जरूरी कर्म मानकर संस्कारों का हिस्सा बनाया। जैसे-जैसे नहरी तथा पाइप वाटर सप्लाई बढ़ती गई, जल के मूल स्त्रोतों से हमारा रिश्ता कमजोर पड़ता गया। सभी की जरूरत के पानी का इंतजाम हम करेंगे। नेताओं के ऐसे नारों ने इस कमजोरी को और बढ़ाया। लोगों ने भी सोच लिया कि सभी को पानी

शहरी जलापूर्ति पाइपों द्वारा की जा रही है

नदियों को जोड़ने, तोड़ने-मोड़ने अथवा बांधने का काम बंद करो। रीवरसीवर को मत मिलने दो। ताजा पानी नदी में बहने दो। उपयोग किया शोधित जल, नहरों में बहाओ। जल बजट को जल निकासी में कम, वर्षा जल संचयन में ज्यादा लगाओ। नहर नहीं, ताल, पाइन, कूलम आदि को प्राथमिकता पर लाओ। फारेस्ट रिजर्व की तर्ज पर वाटर रिजर्व एरिया बनाओं ये सरकारों के करने के काम हो सकते हैं। पानी की ग्राम योजना बनाना, हर स्थानीय ग्रामीण समुदाय का काम हो सकता है।

पिलाना सरकार का काम है। इससे पानी संजोने की साझेदारी टूट गई। परिणामस्वरूप, वर्षा जल संचयन के कटोरे फूट गये। पानी के मामले में स्वावलंबी रहे भारत के गांवनगर 'पानी परजीवी में तब्दील होते गये।

हमारी सरकारों ने भी जल निकासी को जलाभाव से निपटने का एकमेव समाधान मान लिया। जल संसाधन मंत्रालय, जल निकासी मंत्रालय की तरह काम करने लगे। सरकारों ने समूचा जल बजट उठाकर जल निकासी प्रणालियों पर लगा दिया। 'रेन वाटर हार्वेस्टिंग' और 'रूफ टॉप हार्वेस्टिंग' की नई शब्दावलियों को व्यापक व्यवहार में उतारने के लिए सरकार व समाज दोनों आज भी प्रतिबद्ध दिखाई नहीं देती। लिहाजा, निकासी बढ़ती जा रही है। वर्षा जल संचयन घटता जा रहा है। वाटर बैलेंस गड़बड़ा गया है। अब पानी की फिक्सड डिपोजिट तोड़ने की नौबत आ गई है। भारत यूजेबल वाटर एकांउट के मामले में कंगाल होने के रास्ते पर है। दूसरी तरफ कम वर्षा वाले गुजरात, राजस्थान समेत जिन्होंने भी जल के मूल स्त्रोतों के साथ अपने रिश्ते को जिंदा रखा, वे तीन साल सूखे में भी मौत को गले लगाने को विवश नहीं हैं।

जल के असल स्त्रोतों से रिश्ता तोड़ने और नकली स्त्रोतों से रिश्ता जोड़ने के दूसरे नतीजों पर गौर फरमाइये।

नहरों, नलों और बोरवैलों के आने से जलोपयोग का हमारा अनुशासन टूटा। पीछे-पीछे फ्लश टायॅलेट आये। सीवेज मल व अन्य कचरा मिलकर नदियों तक पहुंच गया। इस तरह नल से निकला अतिरिक्त जल प्रदूषित हुआ। नहरों ने नदियों का पानी खींचकर उन्हें बेपानी बनाने का काम किया। इस कारण, खुद को साफ करने की नदियों की क्षमता घटी। परिणामस्वरूप, जलमल शोधन संयंत्र आये। शोधन के नाम पर कर्ज आया-भ्रष्टाचार आया। शुद्धता और सेहत के नाम पर बोतलबंद पानी

नगरों का अपशिष्ट जल नदियों में वहाने से नदियां दूषित हो रही हैं

आया। फिल्टर और आर.ओ. आये। चित्र ऐसा बदला कि पानी पुण्य कमाने की जगह, मुनाफा कमाने की वस्तु हो गया। समंदर से लेकर शेष अन्य सभी प्रकार के जल स्त्रोत प्रदूषित हुए सो अलग। बोलो, यह किसने किया? पानी ने या हमने? पानी दूर हुआ कि हम?

आइये, जल मैत्री बढ़ायें

नदियों को जोड़ने, तोड़ने-मोड़ने अथवा बांधने का काम बंद करो। रीवरसीवर को मत मिलने दो। ताजा पानी नदी में बहने दो। उपयोग किया शोधित जल, नहरों में बहाओ। जल बजट को जल निकासी में कम, वर्षा जल संचयन में ज्यादा लगाओ। नहर नहीं, ताल, पाइन, कूलम आदि को प्राथमिकता पर लाओ। फारेस्ट रिजर्व की तर्ज पर वाटर रिजर्व एरिया बनाओ ये सरकारों के करने के काम हो सकते हैं। पानी की ग्राम योजना बनाना, हर स्थानीय ग्रामीण समुदाय का काम हो सकता है। आप पूछ सकते हैं कि निजी स्तर पर मैं क्या कर सकता हूं?

संभावित उत्तर बिंदुओं पर गौर कीजिए

1. पानी, ऊर्जा है और ऊर्जा, पानी। कोयला, गैस, परमाणु से लेकर हाइड्रो स्त्रोतों से बिजली बनाने में पानी का उपयोग होता है। अतः यदि पानी बचाना है, तो बिजली बचाओ, इंधन बचाओ सोलर अपनाओ।

2. दुनिया का कोई ऐसा उत्पाद नहीं जिसके कच्चा माल उत्पादन से लेकर अंतिम उत्पाद बनने की प्रक्रिया में पानी का इस्तेमाल न होता हो। अतः न्यूनतम उपभोग करो वरना पानी की कमी के कारण कई उत्पादों का उत्पादन एक दिन स्वतः बंद करना पड़ जायेगा।

3. एक लीटर बोतलबंद पानी के उत्पादन में तीन लीटर पानी खर्च होता है। एक लीटर पेटा बोतल बनाने में 3.4 मेगाज्युल ऊर्जा खर्च होती है। एक टन पेटा बोतल के उत्पादन के दौरान तीन टन कार्बन डाइऑक्साइड निकलकर वातावरण में समा जाती है। लिहाजा, बोतलबंद पानी पीना बंद करो। पानी का उपयोग घटाओ।

आर.ओ. प्रणाली से पानी की बर्बादी तो होती ही है, जरूरी मिनरल भी नष्ट हो जाते हैं

4. आर.ओ. प्रणाली, पानी की बर्बादी बढ़ाती है मिनरल और सेहत के लिए जरूरी जीवाणु घटाती है। इसे हटाओ। अति आवश्यक हो, तो फिल्टर अपनाओ। पानी बचाओ सेहत बचाओ।

5. पानी दवा भी है और बीमारी का कारण भी। पानी को बीमारी पैदा करने वाले तत्वों से बचाओ। फिर देखियेगा, पानी की उचित मात्रा, उचित समय, उचित पात्र और उचित तरीके से किया गया सेवन दवा का काम करेगा।

6. सूखे में सुख चाहो, तो कभी कम बारिश वाले गुजरात राजस्थान के गांवों में घूम आओ। उनकी रोटी खेती, मवेशी, चारा, हुनर और जीवन शैली देख आओ। बाढ़ के साथ जीना सीखना चाहें तो कोसी किनारे के बिहार से सीखें। बाढ़ और सुखाड़ के कठिन दिनों में भी दुख से बचे रहना सीख जाओगे।

7. प्याऊ को पानी के व्यावसायीकरण के खिलाफ औजार मानो। पूर्वजों के नाम पर प्याऊ लगाओ। उनका नाम चमकाओ खुद पुण्य कमाओ।

8. स्नानघर अलग चैंबर बनाओ। रसोई की जल निकासी पाइप व शौचालय की मल निकासी पाइप के लिए अलग गांव के हर घर के सामने सोखता पिट बनाओ। छत के पानी के लिए रूफ टॉप हार्वेस्टिंग अपनाओ।

9. जहां सीवेज न हो, वहां सीवेज को मत अपनाओ। शौच को सीवेज में डालने की बजाय, सुलभ सरीखा टैंक बनाओ।

10. बिल्डर हैं, तो अपने परिसर में वर्षा जल संचयन सुनिश्चित करो। खुद अपनी जलमल शोधन प्रणाली लगाओ। पुनर्चक्रीकरण कर पानी का पुनःउपयोग बढ़ाओ। मल को सोनखाद बनाओ।

11. फैक्टरी मालिक हैं, तो जितना पानी उपयोग करो उतना और वैसा पानी धरती को वापस लौटाओ। शोधन संयंत्र लगाओ। तालाब बनाओ।

12. कोयला, तैलीय अथवा गैस संयंत्र के मालिक हैं, तो उन्हें पानी के बजाय, हवा से ठंडा करने वाली तकनीक का इस्तेमाल करो।

13. किसान हैं, तो खेत की मेंड ऊंची बनाओ। सूखा रोधी बीज अपनाओ। कम अवधि व कम पानी की फसल के तरीके अपनाओ। कृषि के साथ बागवानी अपनाओ। देसी खाद व मल्चिंग अपनाकर मिट्टी की गुणवत्ता व नमी बचाओ। बूंद-बूंद सिंचाई व फव्वारा पद्धति अपनाओ।

14. जन्म, ब्याह, मृत्यु में जलदान, तालाब यानी महादान का चलन चलाओ। मानसून आने से पहले हर साल नजदीक की सूखी नदी के हर घुमाव पर एक छोटा कुण्ड बनाओ। मानसून आये, तो उचित स्थान देखकर उचित पौधे लगाओ। नदी किनारे मोटे पत्ते वाले वृक्ष और छोटी वनस्पतियों के बीज फेंक आओ।

15. "तालों में भोपाल ताल और सब तलैया" जैसे कथानक सुनो और सुनाओ। जलगान गाओ। बच्चों की नदी कुओं से बात कराओ। पानी का पुण्य और पाप समझाओ। जल मैत्री बढ़ाओ। असल जल स्त्रोतों से तालाब रिश्ता बनाओ।

संपर्क करें:
अरुण तिवारी
146, सुंदर ब्लॉक, शकरपूर,
दिल्ली-92
मो.नं. 9868793799
ईमेल : amethiarun@gmail.com